भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा सेवा (Indian Audit and Accounts Services - IA&AS) के 2017 बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों का शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर भ्रमण

अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय लेखापरीक्षा एवं सतत विकास केंद्र (International Center For Environment Audit and Sustainable Development द्वारा भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा सेवा के 2017 बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों (Officer Trainees of 2017 batch of Indian Audit and Accounts Services - IA&AS) के लिए आयोजित "एनवायरनमेंट ऑडिट" प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत अध्ययन भ्रमण के अंतर्गत 24 प्रशिक्षु अधिकारियों ने श्री अनुभव श्रीवास्तव (सीनियर एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर) , श्री वीरेंद्र जाखड़ (एडमिनिस्ट्रेट ऑफिसर) एवं श्री पवन कुमार मीणा (असिस्टेंट एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर) के साथ दिनांक 20.07.18 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान का भ्रमण कर वानिकी अनुसंधान कार्यों की जानकारी प्राप्त की ।

भ्रमण के प्रारम्भ में शुष्क वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. आई. डी. आर्य ने दल का संस्थान में स्वागत करते हुए दल के संस्थान भ्रमण हेतु कार्यक्रम की जानकारी दी। भ्रमण कार्यक्रम के प्रारम्भ में निदेशक डॉ. आई. डी. आर्य द्वारा संस्थान के उद्देश्य , अनुसंधान क्षेत्र संबंधी इत्यादि जानकारी (Over-all Review of the Institute) से संबन्धित पावर-पॉइंट प्रस्तुतीकरण दिया जिसके अंतर्गत अनुसंधान गतिविधियों एवं उपलब्धियों की प्रमुख जानकारी (highlights), संस्थान का क्षेत्राधिकार , उद्देश्य (mandate), अनुसंधान फोकस (Research Focus), प्रोवेनेन्स ट्रायल , नीम का सुधार कार्य (Improvement Work on Neem), अरडू में सुधार कार्य (Improvement Work In Ardu), गुग्गल में सुधार कार्य , उत्तक संवर्धन प्रोटोकॉल (Tissue Culture Protocol) सतही वनस्पति के उपयोग से टिब्बा स्थिरीकरण , वनीकरण एवं मृदा तथा जल संरक्षण हेतु वर्षा-जल का संग्रहण (Rain Water Harvesting For Afforestation and Soil and water conservation), जल प्लावित क्षेत्रों का पुनर्वासन, पवित्र वनों की जैव-विविधता (Biological Diversity of Sacred Groves), राजस्थान के वनों में कार्बन स्टॉक , राजस्थान की वन मृदाओं का वर्गीकरण (Forest Soils of Rajasthan Classified), शहरी वानिकी मॉडल (Urban Forestry Model), अकाष्ठ वनोपज़ अनुसंधान गतिविधियां, लवणीय भूमि का पुनर्वासन (Rehabilitation of Salt Lands), शुष्क क्षेत्रों के लिए कृषि वानिकी मॉडल का विकास , एग्री-सिल्वी एवं सिल्वी-पाश्चर मॉडल (Agri-silvi and Silvipasture models), परामर्शी सेवाएँ (consultancies provided), विस्तार गतिविधियां , पब्लिकेशन (Publications) इत्यादि की जानकारी दी।

डॉ. जी सिंह, वैज्ञानिक जी ने भारतीय मरुस्थल में पादप विविधता (Floral Diversity in Indian Deserts) विषय पर प्रस्तुतीकरण द्वारा मरुस्थलीय परिस्थितिकी तंत्र (Desert Ecosystem in India), शुष्क क्षेत्र, थार मरुस्थल, पश्चिमी राजस्थान के कृषि क्षेत्रों में वृक्ष प्रजातियाँ (Trees on Farmlands in Western

Rajasthan), राजस्थान में वृक्षारोपण में प्रयुक्त वृक्ष/झाड़ियाँ (Trees/Shrubs Under Plantation In Rajasthan), राजस्थान के रुक्ष क्षेत्र में पादप विविधता (Flroal Diversity in Arid Areas of Rajasthan), पादपीय साहचर्य युक्ति (Association Strategies), मवेशियों हेतु चारे के प्रमुख स्त्रोत (Sources of Top Feeds For Livestocks), वनस्पति (Vegetation), प्रमुख पर्यावास (Major Habitates); थार में मुख्य वानस्पतिक प्रकार (Major Vegetative Types In Thar), लवणीय अवनमित क्षेत्र (Saline Depressions), नदी तल (River Beds), टिब्बा एवं अंतरा टिब्बा क्षेत्र (Sanddune and Interdunes), मरुस्थलीय टिब्बे, मृदा क्षरण एवं बालू टिब्बा स्थानांतरण की अन्तःस्थलीय समस्या (Inland Problem of Soil Erosion and Sand Drifting), इस क्षेत्र की महत्वपूर्ण स्थानीय प्रजातियाँ (Important Indigenous Species of the Region), रेतीले मैदान (Sandy Plains), टिब्बों और अवनमित क्षेत्र की वनस्पति (Vegetation of dunes and depressions) कंकड़युक्त पेड़िमेंट्स (Gravelly Pediments), घास प्रजातियाँ, पादप अनुकूलन (plant adaptation to the region), खेती के पेटर्न (Cultivation Patterns), स्थानीय वनस्पति का कम होता पर्यावास (Shrinking Habitats of the Local Flora), घास के मैदानों में मानवीय हस्तक्षेप (Human Interventions in Grasslands) इत्यादि विषयों पर विस्तृत जानकारी दी । डॉ. सरिता आर्या, वैज्ञानिक जी ने गुणवत्ता युक्त रोपण सामग्री के उत्पादन (Production of Quality Planting Material) विषय पर अपने पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण में कैर (*Capparis decidua*), बांस, शीशम के उत्तक संवर्धन, औषधीय पौधों के क्षेत्र संवर्धन, नीम के वृहत संवर्धन (Micropropogation of *Azaidirachta* - नीम) इत्यादि विषयों से संबन्धित जानकारी दी ।

कार्यक्रम के दौरान प्रश्नोत्तर/परस्पर संवाद के माध्यम से प्रशिक्षु अधिकारियों की जिज्ञासा का समाधान किया गया। विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा. व. से. ने वन विज्ञान केंद्र, विस्तार एवं निर्वचन केंद्र, वृक्ष उत्पादक मेला आयोजन, विभिन्न मेलों में आफ़री की भागीदारी, संस्थान में विभिन्न समूहों/व्यक्तियों का भ्रमण, प्रशिक्षण, पब्लिकेशन, आफरी दर्पण , प्रचार-प्रसार साहित्य , इत्यादि प्रचार-प्रसार गतिविधियों की जानकारी दी।

इसके बाद प्रशिक्षु अधिकारियों ने संस्थान के विस्तार एवं निर्वचन केंद्र का भ्रमण कर वहाँ प्रदर्शित अनुसंधान संबंधी सूचनाओं एवं वनोत्पाद संबंधी सामग्री का अवलोकन किया । यहाँ पर श्री उमाराम चौधरी ने प्रशिक्षु अधिकारियों को अवक्रमित पहाड़ियों का पुनर्वासन (Rehabilitation of Degraded Hills), टिब्बा स्थिरीकरण (Sanddune stabilization), जल प्लावित भूमि का पुनर्वासन (Rehabilitation of Waterlogged Areas), लवण प्रभावित भूमि का पुनर्वासन (Rehabilitation of Salt Affected Soils), कृषि वानिकी मॉडल (Agroforestry Models), इत्यादि की जानकारी प्रशिक्षु अधिकारियों को दी।

श्री चौधरी ने प्रशिक्षु अधिकारियों को परिसर में स्थित चन्दन , खेजड़ी, बादाम, कुमट, सागवान वृक्ष प्रजातियों की जानकारी भी दी। भ्रमण कार्यक्रम में श्री धानाराम, तकनीकी अधिकारी का सहयोग रहा।

विस्तार एवं निर्वचन केन्द्र